RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक : 2
सृष्टि संवत् 1960853117
10 अप्रैल 2016
दयानन्दाब्द : 192
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-73, अंक : 2, 7-10 अप्रैल 2016 तदनुसार 28 चैत्र सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०


# उत्तम उपदेशक पाप से बचाएँ

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

**अवन्तु नः पितर : सुप्रवाचना उत देवी देवपुत्रे ऋतावृधा।**
**रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन॥**

-ऋ० १।१०६।३

**शब्दार्थ-सुप्रवाचनाः** = उत्तम प्रवाचन करने वाले = पढ़ाने और उपदेश करने वाले **पितरः** = ज्ञानी गुरु **उत** = और **देवपुत्रे** = दिव्य सन्तानवाली **ऋतावृधा** = ऋत से बढ़ने वाली **देवी** = दिव्य-गुणयुक्त, या व्यवहार-साधिका माता और पिता **नः** = हमारी **अवन्तु** = रक्षा करें, कार्यसिद्धि करें, हमें तृप्त करें। हे **सुदानवः** = उत्तम दानी **वसवः** = वसुओं ! **दुर्गात् रथं न** = बुरे मार्ग से रथ की भाँति **विश्वस्मात्** = सम्पूर्ण **अंहसः** = पाप से **नः** = हमें **निः+पिपर्तन** = सर्वथा बचाओ।

**व्याख्या**-अज्ञान के कारण ही मनुष्य की पापकर्म में प्रवृत्ति होती है। माता, पिता, गुरु पाप से बचा सकते हैं। बाल्यावस्था में बालक माता और पिता के पास रहता है, अतः माता-पिता के आचारों, व्यवहारों और संस्कारों का बालक पर प्रभूत प्रभाव पड़ता है। उठना, चलना, फिरना, बोलना, अङ्गसंचालन आदि समस्त क्रियाओं में माता-पिता के व्यवहारों की छाप होती है। माता-पिता चाहें तो बालक को शुद्ध संस्कार डालकर, अपने आचार-व्यवहारों से उसे दिव्य-गुणसम्पन्न महात्मा बना दें और चाहें तो उसे जनसमाज का विनाशकारी बना दें। मनुष्य की भलाई-बुराई का मूल साधारणतया उनके माता-पिता में खोजना चाहिए। इस आयु में पड़े संस्कार प्रायः अमिट-से होते हैं। इसके बाद आचार्य का स्थान है। आचार्य का अर्थ है-**आचारं ग्राहयति** = जो आचार सिखलाये, सो आचार्य। यदि आचार्य योग्य हो, तो वह काया पलट देता है, माता-पिता के डाले कुसंस्कारों को उलट देता है।

बहुधा ऐसा देखा गया है कि माता-पिता के कुसंस्कारों को या बालक के जन्मगत दुष्टसंस्कारों को हटाने के स्थान में आचार्य ने उनको पुष्ट किया है और बालक युवक या प्रौढ़ होकर दुर्दान्त हो गया है तथा पतन की चरम सीमा तक पहुँच गया है कि उसे किसी महात्मा के दिव्य उपदेश सुनने का सु-अवसर मिलता है। उस जीवन पलटने वाले उपदेश से उसके जीवन में सहसा एक आश्चर्यजनक, विस्मयकारक परिवर्तन आ उपस्थित होता है और जो कल पाप-पङ्क में लतपथ था, आज प्रायश्चित्त के पावन अश्रुजल से अपना सारा मल प्रक्षालन कर उज्ज्वल, विमल बन गया है। नया जीवन देने के कारण वे महात्मा सचमुच पिता कहलाने के अधिकारी हैं। ऐसे नवजीवनदाता महात्माओं को इस मन्त्र में 'पितर' कहा गया है और कामना की गई है-'**अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचनाः**'-सुप्रवाचन पिता हमारी रक्षा करें। ऐसे महापुरुष सचमुच पितर हैं।

यहाँ 'पितरः' शब्द का विशेषण '**सुप्रवाचनः**' ध्यान देने योग्य है। 'सुप्रवाचनाः' का अर्थ है उत्तम बाँचनेवाले, उत्तम उपदेश और अध्यापन करनेवाले (Good Speakers, Good Lecturers). सचमुच वक्ताओं में बड़ा बल होता है। उत्तम प्रवक्ता काल का प्रवाह बदल देते हैं। अनेक बार का अनुभव है कि जिनके सुधरने की कोई आशा नहीं थी, किसी उत्तम उपदेष्टा के उपदेश-श्रवण से उनके जीवनों में उथल-पुथल मच गई।

रक्षा का प्रकार भी वर्णन कर दिया है कि जिस प्रकार कुशल सारथि खराब मार्ग से भी आसानी से रथ को हाँक लाता है, उसी प्रकार उत्तम उपदेशक भी पाप-पङ्क में धँसे मनुष्य के जीवन शकट को अपनी कुशलता से सर्वथा बाहर निकाल लाते हैं।

माता पिता के डाले कुसंस्कारों को आचार्य, उपदेशक दूर कर सकता है, जैसा कि वेद में कहा है-

**यदेनसो मातृकृताच्छेषे पितृकृताच्च यत्। उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते॥**

-अ० ५।३०।४

जो तू माता के किये अपराध से, पिता के किये अपराध से सोया पड़ा है, उससे छूटने-छुड़ाने का उपाय वाणी द्वारा तुझसे कहता हूँ।

आचार्य का कर्त्तव्य, उपदेशक का कर्त्तव्य बहुत ऊँचा है। यद्यपि वैदिक धर्म के अनुसार सन्तानोत्पादन एक पवित्र यज्ञ है, तथापि संसार के अधिकांश मनुष्य इस पवित्र कर्म को केवल कुत्सित वासना के वशीभूत होकर करते हैं। उस कुत्सित वासना के परिणाम में यदि सन्तान हो जाए, तो उसका उत्कृष्ट होना कम ही सम्भव है। यदि सौभाग्य से उस कुसन्तान को योग्य आचार्य मिल जाए तो उसके कल्याण की सम्भावना है। आचार्य अपनी शिक्षा-दीक्षा के बल से महनीय है। इसीलिए वैदिक धर्मी आचार्य का, गुरु का, उपदेशक का, संन्यासी का राजा से भी अधिक सम्मान करते हैं, ऐसा करना उचित भी है।

# नवसम्वतसर की महत्ता

-ले. वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर फाजिलका, पंजाब

**मंगलं करोतु कल्याणं आरोग्यं धन सम्पदः।**
**वर्धयतु 'वेद'-ज्योतिश्च शुभं-करो भवतु नवसंवत्सरः॥**
**मंगल करे अरु कल्याण भी,**
**दे आरोग्य औ धन सम्पदा।**
**'वेद'-ज्योति का वर्धन करे,**
**नवसंवत्सर हो शुभकारी सदा॥**

भारतीय संस्कृति में विभिन्न पर्वोत्सव हार में मोतियों की भांति पिरोए हुए हैं। जैसे मोतियों को हार से पृथक् नहीं किया जा सकता, वैसे ही इन पर्वो को भारतीय संस्कृति से पृथक् नहीं किया जा सकता। ये पर्व हमारे जीवन में सुख, शान्ति, हर्षोल्लास, कर्त्तव्यपरायणता, निरभिमानता एवं नवप्रेरणा का संचार करते हैं।

आज यह नवसंवत्सर अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों को अपने अन्दर समाविष्ट किए हुए विगत वर्ष में किए गए सत्-असत् कर्मों के प्रति आत्म-चिन्तन का सन्देश लेकर उपस्थित है। हे नवसंवत्सर ! हे नववर्ष ! तुम्हारा यह शुभागमन सम्पूर्ण मानव जाति एवं समस्त प्राणियों के लिए मंगलमय हो।

संवत्सर की महत्ता एवं उद्देश्य

**1. सृष्टि संवत्सर**-सृष्टि की उत्पत्ति चैत्रमास के शुक्लपक्ष प्रतिपदा को हुई थी। अतः सृष्टि संवत्सर का प्रारम्भ इसी समय हुआ था। ज्योतिष के हिमादि ग्रन्थ के अनुसार-

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।

शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति॥

चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा को सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही प्रथम सूर्योदय होने पर मेष संक्रान्ति और काल के विभाजन वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, दिन, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न, पल, विपल आदि एक साथ प्रारम्भ हुए। उसी समय से यह दिवस सृष्टि संवत्सर के नाम से प्रचलित हुआ।

आर्य ज्योतिष-शास्त्र के प्रामाणिक ग्रन्थ 'सिद्धान्त शिरोमणि' के अनुसार-

लंकानगर्यामुदयाच्च मानोः तस्यैव बारं-प्रथमं बभूव।
मधोः सितादेः दिनमास-वर्ष-युगादिकाना युगपत प्रकृतिः॥

लंका-नगर में सूर्योदय के समय, उसी के बाद अर्थात् रविवार को, चैत्रमास शुक्लपक्ष के प्रारम्भ में 'दिन-मास-वर्ष युग' सभी एक साथ प्रचलित हुए। इसी समय से ब्राह्मदिन, सृष्टि संवत्, वैवस्वतादि मन्तवन्तर गणना, सत्य-नेता-द्वापर-कलियुग के संवत् विक्रमसंवत् आदि की गणना की जाती है।

**2. सृष्टि के आदि में वेदज्ञान-** वेद मानव संस्कृति, धर्म, कर्म, उपासना, ज्ञान-विज्ञान के मूल आधार हैं। वेदों का ज्ञान सदैव सत्य, सनातन, शाश्वत्, अप-रिवर्तनीय, सार्वभौम, अपौरुषेय एवं सर्वमान्य है। ऋग्, यजु, साम, और अथर्व-इन चारों वेदों का ज्ञान उस परम पिता परमात्मा ने मानव सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया था। अतः वेदों का प्रादुर्भाव भी मानव सृष्टि-के आदि में हुआ था। जिससे सूर्य के प्रकाश के साथ-साथ वेदों के ज्ञान का प्रकाश भी चहुंदिश विस्तृत हुआ।

**3. युगाब्द का आरम्भ-** सत्युग, त्रेता, द्वापर और कलि-युग-इन चारों युगों का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। अतः इन युगाब्दों का अपना महत्त्व है। आजकल कलियुग चल रहा है। जिसके 5114 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और आज (2014 ई.) 5115वाँ युगाब्द आरम्भ हो रहा हैं।

**4. विक्रमी संवत्**-भारतीय समाज पर काले बादलों एवं अत्याचारों की आंधी के रूप में उमड़े शक-हूणों पर विजय प्राप्त करने वाले प्रजापालक, स्वर्ण-युग निर्माता, न्यायशील, परोपकारी, महान् सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की महत्वपूर्ण विजयों के उपलक्ष्य में विक्रमी संवत् का शुभारम्भ हुआ। आज भी यह संवत् हमें अन्याय पर विजयप्राप्ति के लिए प्रेरित कर रहा है।

**5. आर्य समाज स्थापना दिवस**-वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द जब इस पावन धरा पर अवतीर्ण हुए, उस समय धर्म, सभ्यता, संस्कृति की विलक्षण अवस्था हो गयी थी। सत्य सनातन वैदिक धर्म के ज्ञान, कर्म और उपासना का स्थान नवीन मतों के आडम्बर, मिथ्या विश्वास, तान्त्रिक जादू होना और जड़पूजा ने ले लिया था। मनुष्य मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण की मिथ्या सिद्धियों में फंस चुका था। लोग जीवित माता, पिता, आचार्य, अतिथि का आदर-सम्मान, पूजा, सत्यभाषण आदि सच्चे तीर्थों को भूल कर जल, स्थल आदि को ही तीर्थ मान बैठे थे। गुण, कर्म के आधार पर व्यवस्था लुप्त हो चुकी थी। सच्चे योगियों का स्वरूप शास्त्रों में ही रह गया था।

दूसरी ओर यूरोप से उठी हुई पाश्चात्य सभ्यता की प्रबल आंधी प्राचीन सभ्यता संस्कृति को निगलती जा रही थी। भारतीय प्रजा गौरांग-प्रभुओं का रहन-सहन, खानपान तथा उसके बैठने तक की नकल करने में अपना गौरव समझती थी। भूगोल, खगोल, रयासन तथा पदार्थ विज्ञान आदि सारी विद्याओं के आविष्कर्ता भी पाश्चात्य विद्वान् ही समझे जाते थे।

एक ओर जहां पुराने आचार-विचार के लोग नाममात्र के ब्राह्मणों एवं संस्कृत के वाक्य को ''ब्रह्म-वाक्यम्'' कहकर परम प्रमाण मानते थे ; वहां दूसरी ओर पाश्चात्य शिक्षा में दीक्षित एवं आलोकित नवयुवक तर्क रहित ब्रह्मवाक्यों को भी सुनने को तैयार न थे। परिणाम स्वरूप नई पौध के लोग नास्तिक और भोगवादी बन कर प्राचीन सत्य धर्म, सभ्यता, संस्कृति से बिल्कुल विमुख हो रहे थे।

ऐसी विषम परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। महर्षि में गुरुवर विरजानन्द के सान्निध्य में रहकर व्याकरण, वेदादि शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। तत्पश्चात् गुरुदक्षिणा के रूप में भारतभूमि से अज्ञान, अन्ध विश्वास, रूदिवाद, आडम्बर, पाखण्ड आदि को हटा कर वेदों का सन्देश जन-जन तक पहुंचाने का वचन देकर गुरुदेव की कुटिया से निकल पड़े।

वैदिक धर्म के सतत प्रचारार्थ और मानवमात्र के उपकारार्थ मुम्बई में डॉ० मानिक चन्द की वाटिका में चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा विक्रमी संवत् 1932 तदनुसार 7 अप्रैल, 1875 को महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। जो कि आज भी उनके सन्देश को जन-जन तक हेतु प्रयासरत है।

आज आर्य समाज स्थापना दिवस के इस पावन पर्व पर हम सभी वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार, अन्ध विश्वास और रूढ़िवाद के विनाश और राष्ट्रीय एकता का व्रत लें, तभी इस पर्व को मनाने की सार्थकता है। प्रभु सभी आर्यों को ऐसी शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करे जिससे वे इस पुनीत कार्य में सफल हो सकें। हमारी यही मंगल कामना है।

**6. नववर्ष का आगमन-** सामान्यतः सिद्धान्त की बात यह है कि नववर्ष के आगमन के समय कुछ न कुछ नवीनताएं अवश्य होनी चाहिए। ये नवीनताएं ऋतुओं एवं वनस्पतियों में आने वाले परिवर्तन के कारण हो सकती हैं।

चैत्रमास में वसन्त ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु में प्रकृति की शोभा अनुपम होती है। निरभ्र आकाश अत्यन्त स्वच्छ और निर्मल होता है। पृथिवी पर मखमल के समान बिछी हुई हरी-हरी घास मनमोह लेती है। पेड़, पौधों एवं लताओं पर रंगबिरंगे खिले हुए फूलों को देखकर मन की कली भी खिल उठती है।

यह ऋतु चैत्र और वैशाख इन दो महीनों में होती हैं-

**मधुश्च माधवश्च वासन्ति-कावृतु॥ यजु 13/25**

वेद में प्रथम मास का नाम 'मधु' है। 'चित्रा' नक्षत्र के कारण इसका नाम 'चैत्र' है। वेद का मधु और ज्योतिष का चैत्रमास एक ही है। इसी प्रकार वेद में 'माधव' और ज्योतिष में 'वैशाख एक ही मास के नाम हैं। इन्हीं दो मासों को मिला कर वसन्त ऋतु होती है।

**मुखं वा एतद् ऋतूनां यद् वसन्तः॥ तै. ब्रा. 1/1/2।6,7**

**(शेष पृष्ठ 7 पर)**

## सम्पादकीय......

# भारत माता की जय पर निरर्थक विवाद

हमारे देश में इस समय कुछ ऐसे निरर्थक विवादों को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे हमारे देश की छवि अपने ही देश में नहीं विदेशों में भी धूमिल हो रही है। कुछ स्वार्थी और संकीर्ण मानसिकता वाले लोग इसे बढ़ावा दे रहे हैं। रोज नए- नए विवाद देखने और सुनने को मिलते हैं। यह सब कुछ उस समय से शुरू हुआ जब इस देश की सत्ता भारतीय जनता पार्टी से संभाली और इस देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी बने। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि इसका कारण भारतीय जनता पार्टी है और उसके जिम्मेदार प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं। हमारे देश में यह सब कुछ इसलिए हो रहा है क्योंकि कुछ लोगों को श्री नरेन्द्र मोदी का प्रधानमन्त्री बनना हजम नहीं हो रहा है। भारतीय जनता पार्टी के सत्ता में आने के बाद कुछ स्वार्थी और संकीर्ण मानसिकता वाले नेताओं और बुद्धिजीवियों के द्वारा यह षडयन्त्र रचा जा रहा है कि किस प्रकार इस पार्टी को और प्रधानमन्त्री को नीचा दिखाएं और लोगों के अन्दर भय पैदा किया जाए। उसी का परिणाम आज देखने को मिल रहा है। जे.एन.यू. में देश की बर्बादी के नारे लगाना, मनुस्मृति की प्रतियां जलाना, भारत माता की जय न बोलना आदि सभी विवादों के पीछे वही लोग जिम्मेवार हैं जिन्हें सत्ता के बाहर रहना पसन्द नहीं है। सत्ता का सुख कैसे भी मिले वे लोग किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। देश का हित या अहित इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता कि देश किस दिशा में जा रहा है। इन राष्ट्रविरोधी कार्यों के कारण आज हमारे देश की शान्ति भंग हो रही है।

भारत माता की जय पर विवाद भी इन्हीं लोगों की देन है। जिस देश में रहते हैं, जहां का अन्न-जल खाकर बड़े होते हैं, जिस देश के कारण हमारी पहचान होती है, उसी देश की जय बोलने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। तथाकथित बुद्धिजीवियों, प्रवक्ताओं के द्वारा, नेताओं के द्वारा संविधान का हवाला देकर यह सिद्ध किया जा रहा है कि हमारे देश के संविधान में कहीं पर भी भारत माता की जय बोलना नहीं लिखा है। क्या हर चीज हम संविधान के अनुसार करते है या फिर अगर कुछ संविधान में नहीं भी लिखा है तो हम अपनी मनमर्जी करे, देश को तोड़ने की बात करें, देश की बर्बादी के नारे लगाएं। शायद संविधान निर्माताओं को इस बात का अनुमान नहीं होगा कि इतने वर्षों की गुलामी सहन करने के बाद भी इस देश के लोग अपनी बर्बादी की बात सोचेगें। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि इतने वर्षों तक गुलामी सहने के बाद भी हमें सबक नहीं मिला है। इतने देशभक्तों के बलिदान के बाद मिली आजादी का हम इस प्रकार दुरूपयोग करेंगे। शायद आज उन देशभक्तों की आत्मा भी यह सुनकर दुखी होगी कि आजाद देश में भी लोग भारत माता की जय नहीं बोलना चाहते। गुलामी के दौर में अनेकों यातनाएं सहन करने के बावजूद हमारे देशभक्त बड़े गर्व से भारतमाता की जय बोलते थे चाहे वो हिन्दु हों, मुस्लिम हों, सिख हो।

आज आजादी के पश्चात भी कुछ लोगों के द्वारा भारत माता की जय बोलने पर आपत्ति उठाना भारत देश का दुर्भाग्य है। यह सब उन तथाकथित नेताओं का बुना हुआ षडयन्त्र है जो सेक्यूलर होने का दावा करते हैं। ऐसे स्वार्थी नेताओं के लिए देश की बर्बादी से कोई लेना-देना नहीं है। सत्ता बनी रहे इसके लिए वे कुछ भी कर सकते हैं। एक पार्टी के नेता ने तो यहां तक कह दिया कि 2009 के लोकसभा चुनावों में उनकी पार्टी ने हर अखबार के पहले पेज को खरीदा हुआ था और उसका अपनी मनमर्जी से उपयोग करते थे। जब हमारे देश के सरकारी खजाने का इस प्रकार दुरूपयोग होगा, सत्ता में आने के लिए सरकारी खजाने को खाली किया जाएगा तो जनता के अच्छे दिन कैसे आएंगे। आज लोगों के बीच जाकर उनके हितैषी होने का दावा करते हैं। ऐसे लोग अपनी देशभक्ति का दावा करते हैं। इन लोगों की देशभक्ति का और तुच्छ मानसिकता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिस राष्ट्रभक्त वीर सावरकर ने देश की आजादी के लिए कार्य किया, अनेकों कष्टों को सहन किया उसी देशभक्त को गद्दार और विश्वासघाती कहते हैं और जो देशद्रोह का आरोपी छात्र कन्हैया है जिसने देश की बर्बादी के नारे लगाने वालों का समर्थन किया उसकी तुलना देश की आजादी के लिए फांसी पर चढ़ जाने वाले शहीद भगत सिंह से की जाती है। ऐसी तुच्छ और घृणित मानसिकता वाले नेताओं से देश के गौरव और सम्मान की उम्मीद कैसे की जा सकती है।

भारत माता की जय पर कोई विवाद नहीं होना चाहिए और न ही किसी को इस पर कोई आपत्ति होनी चाहिए। भारत माता की जय बोलना गौरव की बात होनी चाहिए। भारत माता की जय को किसी भी मत, मजहब और सम्प्रदाय से नहीं जोड़ना चाहिए। भारत माता किसी धर्म का, मत, मजहब और सम्प्रदाय का विषय नहीं है। यह हमारे राष्ट्र के गौरव का विषय है। राष्ट्र की एकता और अखण्ड़ता से किसी भी प्रकार समझौता नहीं किया जा सकता। सभी मतभेद और स्वार्थ अपनी जगह पर हैं। राष्ट्रहित में इनका कोई स्थान नहीं हैं। राजनीति का यह नियम होना चाहिए कि जहां पर राष्ट्र की एकता और अखण्ड़ता का प्रश्न हो सभी राजनीतिक दल एक होकर उसका पालन करें। नीतियों में मतभेद हो सकता है, विचारधारा में मतभेद हो सकता है, परन्तु राष्ट्र की एकता और अखण्ड़ता के विषय में किसी प्रकार का मतभेद नहीं होना चाहिए। भारत माता की जय के ऊपर विवाद करना भी राष्ट्र के हित में नहीं है। बहुत से मुद्दे हमारे देश में हैं जिनके ऊपर चर्चा होनी चाहिए। गरीबी को कैसे दूर करें, करप्शन से कैसे लड़ा जाए, बुराईयों को कैसे दूर किया जाए, नशे से युवा पीढ़ी को कैसे बचाएं। ये विषय चर्चा करने के लिए हैं। अभी कलकत्ता में एक ओवरब्रिज गिरकर कितने ही लोगों की मौतें हुई हैं, इनके कारणों पर चर्चा करने की आवश्यकता है। कम्पनी का अधिकारी कहता है कि ये भगवान की मर्जी है। न्यूज चैनल जो छोटी-छोटी घटनाओं को सनसनीखेज बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। वे सभी चैनल इस दर्दनाक घटना को छोड़कर भारत माता की जय पर लाईव बहस दिखाने में लगे हैं। कैसे यह घटना हुई, किस कारण ओवरब्रिज जो आरम्भ होने से पहले ही गिर गया? ऐसी घटनाओं का निष्कर्ष निकालने के बजाय सभी मीडिया हाऊस निरर्थक विवाद में लगे हुए हैं। इन घटनाओं से कहीं न कहीं मीडिया की निष्पक्षवादिता पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा होता है।

अन्त में केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि आज राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को सजग रहने की आवश्यकता है। देश में जो माहौल स्वार्थी तत्वों के द्वारा बनाया जा रहा है उससे सावधान होने की आवश्यकता है और आम जनता को जागरूक करने की आवश्यकता है जो इन स्वार्थी नेताओं के बहकावे में आ जाती है। भारत माता की जय न कोई विवाद था, न है और न ही होना चाहिए। हर किसी को जो इस देश का नागरिक है उसे भारत माता की जय बोलनी चाहिए और इस पर गर्व होना चाहिए।

**-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री**

# पूज्य गुरुवर स्वामी सर्वानन्द जी

दिनांक 13 अप्रैल सन् 1900 ई० को इस महान विभूति ने रोहतक जिला के गांव सासरोली में एक क्षत्रिय किसान परिवार में जन्म लिया। आपके इस जन्म परिग्रह से श्रीमती फूला देवी एवं श्रीमान् हरदयाल ने मातृत्व एवं पितृत्व प्राप्त कर अपने आपको सौभाग्यशाली समझा। बालक में निहित गुणों को जान सुयोग्य माता-पिता ने गुणानुरूप-'राम, चन्द्र इव चकासते इति' रामचन्द्र यह नाम रखा। राम रूपी चन्द्र ने अपनी सौम्यता, सुशीलता एवं विनम्रता शालिनि प्रतिभारूपी चन्द्रिका से समस्त गुरूजनों को आह्लादित करते हुए जाट कॉलेज रोहतक से दशम कक्षा उत्तीर्ण की।

**आर्य समाज की ओर :** ग्राम सासरोली में आर्य समाज मन्दिर नहीं था परन्तु कुछ आर्य समाजी थे। जिनके कारण ग्राम में ही श्री रामचन्द्र जी का आर्यसमाज से परिचय होने का अवसर मिला। महाराज के समकालीन स्वामी विद्यानन्द जी सासरोली निवासी बताते है, कि प्रभु भक्ति गुण स्वामी जी में बचपन से ही था।

ग्राम के चबूतरे पर अपने मित्रों को एकत्रित करके सत्संग का आयोजन करते थे। साथियों को पढ़ाते और पढ़ने की प्रेरणा करते थे।

**वैराग्य :** स्वामी जी के जीवन में सन् 1910 का वर्ष विशेष महत्त्व रखता है। आर्य समाज के इतिहास में भी यह वर्ष विशेष स्थान रखता है। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के जन्मदाता श्री मुन्शीराम से जगत प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द बनने का था। सन्यास दीक्षा के समय आप वहां उपस्थित थे, 10 वर्षीय किशोर रामचन्द्र को निश्चय ही अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए इस अवसर ने प्रेरित किया। स्कूल जीवन में अध्ययन और खेलकूद में अपने सहपाठियों में अग्रणी होने के कारण अध्यापकों और मित्रों के प्रिय रहे। विचारों की स्पष्टता के साथ-साथ संस्कृत भाषा सीखने व वेदों का अध्ययन करने की आपकी लग्न तीव्र से तीव्रतर होती गयी। ऐसे समय में अवसर आ गया मथुरा जन्म शताब्दि का। वहां आपने आर्य सन्यासियों, वेद के विद्वानों, कर्मठ निष्ठावान आर्य नेताओं को सुना और निकट से देखा तो आप में नई स्फूर्ति आ गयी। मथुरा शताब्दी से पूर्व एक बार दिल्ली के परेड मैदान पर आर्य समाज की ओर एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा को सम्बोधित करने के लिए आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी आचार्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी पधारे थे। इस सभा को सुनने के लिए आप भी पहुंचे थे। खाली समय में मैदान के एक भाग में बैठकर आप स्वाध्याय में संलग्न थे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का इधर आगमन हो गया। यह गुरु शिष्य की प्रथम भेंट आर्य जगत् के लिए मणिकांचन सहयोग सिद्ध हुआ। शिष्य ने गुरू पा लिया और गुरु को शिष्य मिल गया।

**आर्य सिद्धान्तों का अध्ययन:** आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य समाज के प्रचार और प्रसार के लिए वेदानन्द जी तीर्थ महाराज से सन्यास की दीक्षा ली। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान तथा अधिकारी उपस्थित थे। संस्कार विधि के अनुसार स्वामी सर्वानन्द जी ने भिक्षा भी मांगी। महाशय कृष्ण जी ने सर्वप्रथम आपके चरण स्पर्श किये। पश्चात् सभी प्रतिष्ठित आर्यों ने स्वामी जी का अभिवादन किया। वे नयन कितने सौभाग्यशाली थे जिन्होंने श्री महाराज की सन्यास दीक्षा का महोत्सव देखा।

**कर्म क्षेत्र में पदार्पण :** स्नातक बनने के उपरान्त 1933 से 1936 ई. तक आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्ग वेद प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज खेमकरण से एक थैला और एक आसन लाये थे। वे दोनों वस्तुएं शिष्य को भेंट कर दी और सबसे पहले गोजरा जिला लायलपुर में प्रचार करने के लिए भेजा। दयानन्द मठ स्तम्भरूप वयोवृद्ध सेवक वैद्य सांईदास जी की जन्मस्थली यही गोजरा कस्बा है। सभा ने जहां जाने को कहा ग्राम हो या कस्बा झोपड़ी हो अथवा गगनचुम्बी अट्टालिका आप सहर्ष वहीं जाने को तैयार रहा करते थे। एक बार आपको खैरपु टामवाले (बहावलपुर) में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने वहां धर्म प्रचार किया। प्रचार करते हुए आपको एक अलौकिक आनन्द की अनुभूति हुई। लाहौर लौटकर आपने बड़े गर्व से प. चमूपति जी से कहा, "मैं आपके ग्राम की यात्रा कर आया हूं।" कवि हृदय प. चमूपति झट से बोल उठे "तो पण्डित जी आप हमारे पूज्य पूरोहित हो गये। हमारे घर चलें हम आपको भोजन करवायेंगे।"

**उपदेशक विद्यालय में :** उपदेशक विद्यालय में पं. नरदेव जी के देहान्त के बाद किसी योग्य व्यक्ति का चयन करना सभा के सामने कठिन समस्या थी। नाम तो कई आये परन्तु सहमित न बन सकी। तब पं. रामचन्द्र जी का नाम इस स्थान के लिए सुझाया गया। सभा ने सर्वसम्मति से आपको उपदेशक विद्यालय का प्राध्यापक नियुक्त किया।

**दयानन्द मठ की स्थापना :** मठ की स्थापना के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को कई स्थानों से आर्यो ने निमन्त्रण दिये, परन्तु दीनाननगर में पठानकोट से अमृतसर जाने वाले राजमार्ग पर स्वर्गीय शास्त्रार्थ महारथी महाशय योगेन्द्रपाल जी की कुटिया (देव भवन) में सन् 1938 में आपने दयामन्द मठ की स्थापना कर दी। गुरु जी के आदेशानुसार 1 अप्रैल सन् 1941 ई. को पं. रामचन्द्र जी ने मठ का आन्तरिक प्रबन्ध संभाल लिया। चिकित्सा व सेवा का अनवरत चलने वाला व्रत स्वीकार कर लिया। परिणाम स्वरूप पं. रामचन्द्र जी और मठ पर्यायवाची बन गये। मठ के प्रत्येक कार्य और सदस्यों की आप स्वयं देखभाल करते हैं। शतवर्ष आयु होने के कारण औषद्यालय, फार्मेसी तथा मठ के अन्य कार्यो को अब आचार्य स्वामी सदानन्द जी आपके परामर्श से करते हैं। मठ की गौशाला दर्शनीय है। यहां की गाय अनेक बार पुरस्कृत की जा चुकी है। यहां की फार्मेसी औषधियों की शुद्धता के लिए देशभर में विख्यात है। पुज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने जब मठ की स्थापना की तो वह नियम बनाया कि एक समय का भोजन भिक्षा से आ करेगा। यह नियम तभी से आज तक अनवरत् चला जा रहा है। 'गुरुविच्छेद् शिष्यात् पराभवम्' इस सूक्ति का अनुसरण करते हुए आपने आदर्श गुरु का कार्य आगे बढ़ाया और उनकी इच्छा के अनुरुप यश एवं ख्याति अर्जित की।

**सन्यास दीक्षा :** 3 अप्रैल 1954 ई. को गुरु के देहावसान के पश्चात् अपने गुरु के आदेश का पालन करते हुए। मई 1954 को श्री स्वामी वैदिक और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को भली प्रकार जानने वाले आर्य प्रचारक को तैयार करने हेतु लाहौर में श्री मद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के विद्यार्थी बन गये तथा योग्य गुरुओं के चरणों में बैठकर में शास्त्रों का गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। ज्ञान की गणना करते हुए महाविद्यालय की सिद्धान्त शिरोमणि की उपाधि सन् 1932 ई. में प्राप्त कर प्रथम स्नातक होने का गौरव प्राप्त किया। सन् 1948 में आपकी पूज्या माता श्रीमती फूला देवी का निधन हो गया। परिवार के लोगों ने आपको भी सूचना दी परन्तु आप अन्त्येष्टि एवं किसी शोक सभा में सम्मिलित होने नहीं गये। यहीं सन्यास की मर्यादा है। आर्य समाज इस दृष्टि से भाग्यशाली है कि ऋषि की शिष्य परम्परा में एक ऐसा आदर्श सन्यासी है, जिसने अपने व्यवहार से आर्य मर्यादा का पूरा-पूरा पालन व रक्षा की है। आने वाले युग में आर्य सन्यासियों के लिए स्वामी जी महाराज का शुभ आचरण एक अनन्य उदाहरण रहेगा। आज भी सभी के मुख से हम यही सुनते हैं। 'सन्यासी हो तो ऐसा।'

**त्यागमूर्ति :** समाज, राष्ट्र एवं प्राणिमात्र के हित को सर्वोपरि मानते हुए आपने हिन्दी तथा गौ रक्षा आन्दोलनों में अग्रणी होकर भाग लिया। आर्य जगत् के समस्त ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ एवं सन्यस्त मण्डल की स्थापना की। जिसके नेतृत्व में यह मण्डल महर्षि दयानन्द के कार्य को सुचारू रूप से कर रहा है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# आर्य शब्द को लेकर आज कल एक मिथ्या विवाद सा चल रहा है। आर्य कौन थे और कहां से आये अथवा कहां के रहने वाले थे आदि-आदि !

*संकलनकर्ता- महेन्द्रप्रताप आर्य आर्य समाज, फोकल प्वाईंट, लुधियाना*

आर्य शब्द के प्रमाण

सृष्टि की समकालीन पुस्तकें ऋग्वेद से-

1. कृण्वन्तो विश्मार्यम (सारे संसार आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ !

2. मद्य मांसा पराधेणु ग्रम्या पौरा: न लिप्तिका:।

आर्य ते च निमद्यन्ते सदार्मवर्त वासिन:॥

(अर्थात् वे नगर व ग्रामवासी जो मद्य-मांस और अपराधों में लुप्त न हों तथा सदा से आर्यवर्त के निवासी है वे "आर्य" कहे जाते हैं।

**बाल्मीकि रामायण से-**

3. सर्वदा मिगता: सदिश: समुद्र इव सिन्धुभि:।

आर्य सर्व समश्चैव व सदैव: प्रिय दर्शन:॥ (बालकान्ड)

(अर्थात् जिस प्रकार नदियां समुद्र के पास जाती हैं उसी तरह जो सज्जनों के लिए सुलभ है वे "आर्य" हैं जो सब पर समदृष्टि रखते हैं और सदा प्रसन्नचित रहते हैं।

**महाभारत में-**

4. न वैर मुद्दिपयति प्रशान्त न दर्पयासे हति नास्तिमेति।

न दुर्गतेपीति कंराव्य कार्य, तमयि शील परनाहुरानि। (उपेक्षा पर्व)

अर्थात् जो अकारण किसी से वैर नहीं करते और गरीब होने पर भी कुकर्म नहीं करते उन शील पुरुषों को 'आर्य' कहते हैं।

वशिष्ठ समृति से-

5. कर्तव्यमाचरन काम कर्त्तव्यमाचरन ! तिष्ठति प्रकृताचोर य: स आर्य स्मृत:॥

अर्थात् जो रंग, रूप, स्वभाव, शिष्ठता, धर्म, कर्म, ज्ञान और आचार-विचार तथा शील-स्वभाव में श्रेष्ठ हो उसे 'आर्य' कहते हैं।

निरूक्त में यास्काचार्य जी लिखते हैं-

6. आर्य ईश्वर पुत्र: अर्थात् 'आर्य' ईश्वर के पुत्र हैं।

7. विदुर नीति में, भरत कुल भूषण। पण्डित जन्य जो श्रेष्ठ कर्मों में रूचि रखते हैं, उन्नति के कार्य करते है तथा भलाई के काम करने वालों में योग्यमय निकालने वही 'आर्य' है।

**8. चाणक्य नीति में**-अभ्यासाद् द्ययिते। विद्या कुले शीलेन द्ययिते। गुणेन जायते त्वार्य, कोपो नेत्रेण गम्यते॥

अर्थात् सतत् अभ्यास से विद्या प्राप्त की जाती है, कुल-उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव से स्थिर होता है, 'आर्य' श्रेष्ठ मनुष्य गुणों से जाना जाता है।

**9. नीतिकार के शब्दों में**-प्राय: कन्दुकपातेनोत्यतयार्य: पतन्नपि। तथा त्वनषि पतति मृत्पिण्ड पतन यथा॥

अर्थात् आर्य पाश से लिप्त होने पर भी गेन्द के गिरने के समान शीघ्र ऊपर उठ जाता है अनार्य पतित होता है तो मिट्टी के ढेले के गिरने के समान फिर कभी नहीं उठता।

10. आकृति, प्रकृति, सभ्यता, शिष्टता, धर्म कर्म, विज्ञान, आचार-विचार तथा स्वभाव में जो सर्वश्रेष्ठ हो उसे 'आर्य' कहते हैं। (अमरकोष)

11. आर्य मर्यादाओं को जो व्यवस्थित कर सके और वर्णाश्रम धर्म का स्थापन कर सके वहीं 'आर्य' राज्याधिकारी है। (कौटिल्य अर्थ-शास्त्र)

12. पंण्डित जन सदैव आर्यों के बतलाये धर्म में ही रमण करता है। (धम्य पद)

13. आर्यो ब्राह्मण कुमारयो:। ब्राह्मणों में आर्य ही श्रेष्ठ है। (पाणिनी सूत्र)

14. आर्य धर्मेतराणो प्रवेशोनिषिद्ध:। आर्य धर्म से ऊपर लोगों का प्रवेश वर्जित है। (काशी विश्वनाथ मन्दिर का मुख्यदार)

15. जन्बू द्वीपे भरत खण्डे आर्यवर्ते अमुक देशान्तर्गते.......

ऐसा वाक्य बोलकर पौराणिक भाई भी संकल्प पढ़ते हैं अर्थात् यह आर्यों का देश 'आर्यवर्न्त' है।

16. आचार्य चतुर सेन शास्त्री जी के शब्दों में

**उठो आर्य पुत्र नहीं सोओ, समय नहीं पशुओं हम खोओ।**
**भवर बीच में होकर नायक बनो कटाओ लायक-लायक॥**

17. पण्डित प्रकाशचन्द कविरत्न जी के शब्दों में

**आर्य ब्राहर से आये नहीं, देश है उनका भारतवर्ष।**
**विदेशों में भी बसे सगर्व, किया था परम प्राप्त उत्कर्ष॥**
**आर्य और द्रविड़ जाति है भिन्न चलें यह विदेशियों की चाल।**
**खेद है कुछ भारतीय भी व्यर्थ बजाते विदेशियों सम गाल॥**

18. पंण्डित राधेश्याम कथा वाचक बरेली के शब्दों में भगवान श्रीराम जी का उत्तर

**हम आर्य जाति में क्षत्रिय है, रघुवंशी वैदिक धर्मी है।**
**जो करे एक से अधिक विवाह कहते वेद उन्हें दुष्कर्मी है॥**

19. काका हाथरसी (हास्य रस कवि) के शब्दों में-

**गौरे भारत को नहीं छोड़ते राजी-राजी।**
**अगर न देते सहयोग देश के आर्य समाजी॥**

20. डा. सत्यवर्त शर्मा 'अजेय' के शब्दों में-

**उत्तर में हिमालय दक्षिण में विन्ध्याचल, सीमाओं के प्रह.. का गौरव है गहते॥**

**पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र, कलकल, छल-छल नाद का है बहते॥**

**जितना भूभाग उन चारों के मध्य बस, उसको 'अजेय' ऋषि आर्यवर्त है कहते॥**

21. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में-

**यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है, उसके निवासी आर्य है।**
**विद्या कला कौशल में, सबसे प्रथम आचार्य है॥**
**आभास ईश्वर जीव का, कैवल्य वर किसने किया।**
**सुन लो प्रति ध्वनि हो रही, यह कार्य आर्यों ने किया॥**

22. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की पुस्तक 'स्वमन्तव्याप्रकाश' से-

"आर्यवर्त्त देश उस भूमि का नाम इसलिए है कि इसमें आदि सृष्टि से आर्य लोग निवास करते हैं। इसका स्थान उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में अटक और पूरव में ब्रह्मपुत्र नहीं है। इन चारों के बीच में जितना देश है उसको आर्यवर्त्त कहते हैं और इसमें जो सदा से रहते आये है उनको 'आर्य' कहते हैं।"

## महर्षि दयानंद जी का जन्म व ऋषि बोधोत्सव मनाया

"महर्षि दयानंद जी का जन्म व ऋषि बोध उत्सव" महर्षि आर्य समाज मन्दिर गुरदासपुर में स्त्री आर्य समाज की प्रधान ज्योति नंदा की अध्यक्षता में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। आज की मुख्य मेहमान बहिन सुदर्शन शर्मा जी थी। सबसे पहले आर्य समाज के पुरोहित राम-निवास शास्त्री जी ने हवन-यज्ञ करवाया और हवन यज्ञ के बाद आई हुई बहिनों ने झूम-2 कर भजनों का आनन्द लिया। बाद में शान्ति पाठ के बाद वरिन्द्र जी और राधा गंड्रोत्रा ने ऋषि लंगर का विशेष प्रबन्ध किया हुआ था। पहले आर्य समाज में ऋषि लंगर बांटा गया। बाद में गेट के आगे फिर हनुमान चौंक में लंगर बांटा गया। दूर-2 से बड़ी संख्या में बहिनों ने भाग लिया और अन्त में आई हुई बहिनों का ज्योति नंदा ने धन्यवाद के साथ कहा कि अगर हम महर्षि दयानन्द की तरह इस पर्व से शिक्षा लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिये कार्य करते हैं तभी हमारा बोधोत्सव पर्व मनाना सार्थक हो सकता है। इसमें बहिन निर्मल जी, सत्यादेवी, अरूणा शर्मा सुदर्शन बहिन जी, प्रेम अम्बा, राज, तृप्ता ठाकुर आशा, प्रवीन, कमलेश, किरण उप्पन आदि उपस्थिति हुए। **-मंत्राणी सुदर्शन शर्मा**

# मेरे दलित विचारको ! जानो, भगवान् मनु का सच

*ले. आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, वैदिक वैज्ञानिक अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास*

भगवान स्वायम्भुव मनु मानव जाति के प्रवर्तक होने के साथ-साथ विश्व के प्रथम राजा थे। उनका ग्रन्थ मनुस्मृति संसार की प्रथम मानवीय कृति है। विश्व के सभी देशों की शासन पद्धतियों में इस महान् ग्रन्थ की प्रत्यक्ष वा परोक्ष छाप रही है। करोड़ों वर्षों तक सर्वमान्य इस ग्रन्थ में मध्यकाल में मानवता के शत्रु संस्कृतज्ञों ने अनेक ऐसे प्रक्षेप (मिलावट) किये जिससे विशुद्ध वैज्ञानिक कर्मणा वर्ण व्यवस्था जन्मना जाति व्यवस्था एवं घृणा, द्वेष, भेदभाव की जन्मदात्री बन गयी। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम भगवान् मनु के विशुद्ध स्वरूप को अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में रेखांकित किया। आज हमारे देश में कथित दलित हितैषी, साम्यवादी एवं कथित प्रबुद्ध जन मनुस्मृति के विरुद्ध कोलाहल कर रहे हैं। उन्हें ध्यान नहीं कि डा. भीमराव अम्बेडकर स्वयं स्वीकार करते थे कि वे हिन्दू धर्मशास्त्रों के ज्ञाता नहीं है। उन्होंने विदेशी षड्यन्त्रकारी कथित स्कॉलरों के अनुवाद पढ़कर ही वेद वा मनुस्मृति के विषय में मिथ्या धारणा बनाई। डा. अम्बेडकर को मनुस्मृति के पोषक आर्य समाजी राजा गायकवाड़ एवं शाहू जी महाराज ने ही आर्य नेता पं. आत्माराम अमृतसरी के प्रयास से पढ़ाकर ऊँचा उठाया। डा. अम्बेडकर स्वयं आर्य नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपत राय, पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड एवं आत्माराम जी अमृतसरी आदि को दलितों का मसीहा तथा अपने पितातुल्य मानते थे। दुर्भाग्य से वेद व ऋषियों से अनभिज्ञ परन्तु उन्हीं का नाम लेने वाले नकली ब्राह्मणों ने प्रतिभाशाली अम्बेडकर को बहुत सताया। इसी प्रतिशोधवश वे बौद्ध बन गये। मनुस्मृति का क्षेत्र अति व्यापक है। यहाँ केवल हम इतना बताना चाहते हैं कि यदि आज सामान्य निर्धन दलित वर्ग को मनुस्मृति का यथार्थ स्वरूप विदित हो जाये तो वे ही अपने नेताओं के पाखण्ड को ध्वस्त करके सर्वप्रथम मनु भगवान् की पूजा करेंगे। हमारी घोषणा है कि आज दलितों, शोषितों, निर्धनों का मनु जी से बढ़कर हितैषी संसार में नहीं है। आज जो भी महानुभाव मनु जी का विरोध कर रहे हैं अथवा समर्थन कर रहे हैं (आर्य समाजियों को छोड़कर) उनमें से कोई मनुस्मृति को न तो पढ़ता है और न जानता है। विवेकशील बन्धु निम्न बिन्दुओं पर विचार करें-

१.मनुप्रोक्त वेदानुमोदित वर्ण-व्यवस्था जन्म पर नहीं बल्कि कर्म पर आधारित है। वर्तमान में अध्यापक, सैनिक, व्यापारी व कृषक क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य वर्ण का स्थूल रूप है तथा श्रमिक को शूद्र कहा जा सकता है। यह व्यवस्था श्रम विभाजन पर आधारित थी। जो प्रत्येक देश में विभिन्न नामों से आज तक प्रचलित है और सदैव रहेगी भी।

२. वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित होने से वर्ण परि-वर्तित हो सकता था। ब्राह्मण अयोग्य होने से शूद्र तथा शूद्र योग्य होने पर ब्राह्मण बन सकता था। शूद्र के घर जन्म लेने वाले प्रतिभाशाली बालक को ब्राह्मण के घर तथा ब्राह्मण के घर उत्पन्न मूर्ख बालक को शूद्र के घर भेज दिया जाता था। इसी प्रकार अन्य वर्णों में व्यवस्था शासन द्वारा होती थी। (देखें-सत्यार्थ प्रकाश)

३. एक रुपये की चोरी करने पर शूद्र (श्रमिक) को आठ रुपया, वैश्य (व्यापारी, किसान) को सोलह रुपया, देश के मंत्री को आठ सौ रुपया तथा राजा को एक रुपये की चोरी पर एक हजार रुपया दण्ड मिलता था। इस प्रकार भगवान् मनु की दृष्टि में शूद्र समान अपराध पर भी सबसे कम दण्डनीय होता था और राजा सर्वाधिक दण्डनीय। आज कथित समाजवादी, दलित हितैषी कुशासन में श्रमिक सबसे अधिक पीड़ित होता है। राजा, नेता आनन्द करते हैं, इसी कारण नेता मनुवाद का विरोध करते हैं। वे नहीं चाहते कि गरीब एवं दलित ऊपर उठें।

४. देश के सभी बच्चे अनि-वार्य रूप से शासन के व्यय से पढ़ते थे। आवासीय विद्यालय में राजा से लेकर शूद्र (श्रमिक), भिखारी, उद्योगपति सबके बच्चों को समान स्तर का खान-पान, वस्त्र, बिस्तर, शिक्षा मिलती थी। निजी शिक्षा व्यवस्था कहीं नहीं थी। पूरे देश में समान पाठ्यक्रम, समान सुविधा वाले विद्यालय होते थे। राजकुमार तथा शूद्र वा भिखारी के बच्चे साथ-साथ समान भाव से पढ़ते थे। विद्या पूर्ण होने पर उनके वर्ण का निर्धारण गुरु के द्वारा होता था। राजा अथवा ऋषि का अयोग्य पुत्र शूद्र भी घोषित हो सकता था और किसी शूद्र वा भिखारी का योग्य पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य भी घोषित हो सकता था। ग्रामीण-शहरी, धनी-निर्धन, ब्राह्मण-क्षत्रिय, वैश्य-शूद्र आदि का कोई भेद नहीं था। योग्यता के अनुसार काम मिलता था। आज की आरक्षण व्यवस्था गरीब दलितों के विरुद्ध धनी कथित दलितों (नेता, अधिकारी, उद्योगपतियों) का एक षड्यन्त्र है, यही कारण है कि ये धनी दलित आर्थिक आधार पर आरक्षण की बात करते ही भड़क उठते हैं। यदि मनु की व्यवस्था लागू हो तो देश में कोई गरीब, अशिक्षित, शोषित, दलित, पिछड़ा रहेगा ही नहीं बल्कि सभी उत्तम विद्या, धन व प्रतिष्ठा के भागीदार होंगे। यही आरक्षण के नाम पर राजनीति करने वाले नेता नहीं चाहते हैं। मनु की व्यवस्था में जो वास्तव में अयोग्य होंगे, वे ही शूद्र बनेंगे परन्तु शूद्र का अर्थ भी अछूत नहीं होता था। शूद्र ही ब्राह्मणादि के घर भोजनादि पकाने का कार्य करता था।

५, बालक बालिका सभी पृथक्-पृथक् विद्यालयों में अनिवार्य रूप सम्पूर्ण विद्या को प्राप्त करके समान अधिकार पाते थे। वेद ने नारी को घर की साम्राज्ञी (महारानी) कहा तथा मनु जी ने पूज्या बताया।

यदि आज महर्षि मनु का मत साकार हो जाए तो देश व विश्व की सभी समस्याओं का स्थायी समाधान हो सकता है परन्तु क्या जाति व समुदाय के सहारे जीने वाले राजनेता व कथित प्रबुद्ध वर्ग इस सच को समझने का प्रयास करेंगे ?

## पृष्ठ 4 का शेष-पूज्य गुरूवर स्वामी....

4 नवम्बर सन् 1994 में ऋषि मेला अजमेर के अवसर पर आर्य जगत् ने आपका अभिनन्दन करते हुए 31 लाख रूपये की राशि भेंट स्वरूप प्रदान की। त्याग का आदर्श प्रस्तुत करते हुए आपने यह राशि वैदिक धर्म के प्रचारार्थ परोपकारिणी सभा को सौंप दी। इस प्रकार अन्य अवसरों पर आपने ऐसा ही आदर्श प्रस्तुत किया।

**गुरुणां गुरु :** श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी महाराज, स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज (राजस्थान), स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा), स्वामी सदानन्द जी (दीनानगर), स्वामी वेदानन्द जी (उत्तरकाशी), स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, हरिश्चन्द्र गुरु जी (महाराष्ट्र) आदि आर्य जगत् के योग्यतम सन्यासियों ने आपको ही अपना सन्यास दीक्षा गुरु मानकर सन्यास ग्रहण किया। इस प्रकार आप 'गुरुणां गुरुः' होकर 'जगत् गुरु' के गरिमामय आसन को सुशोभित कर रहे हैं।

पृष्ठ 2 का शेष-नवसम्वतअर की महत्ता

**तस्य ते ( संवत्सरस्य ) वसन्तः शिरः ॥ तै. ब्रा. 3/10/4/1**

वसन्त ऋतु में न अधिक ठंड होती है, न अधिक गर्मी। मौसम सुखदायी होता है। मन्द-मन्द गतिशील पवन अपने स्पर्श से आनन्दित एवं रोमाञ्चित कर देती है। वातावरण न अधिक शुष्क होता है, न अधिक आई। इन्हीं कारणों से वसन्त को ऋतुराज कहा जाता है। अत: इसी वसन्त ऋतु में नववर्ष का शुभारम्भ मानना वैज्ञानिक दृष्टि से भी उचित है।

वसन्त ऋतु में वनस्पतियों में भी नवीनता आ जाती है। उनके पुराने पत्ते सूख कर गिर जाते हैं, और नई कोपलें निकलती हैं। पत्तों का गिरना पतझड़ कहा जाता है जो शिशिर ऋतु में होता है। इसे नवीनता नहीं कह सकते। नई कोपलों का निकलना ही नवीनता का द्योतक है जो वसन्त ऋतु का स्पष्ट लक्षण है। वसन्त ऋतु के अतिरिक्त किसी अन्य समय पर वनस्पतियों में इतना व्यापक एवं विशेष परिवर्तन नहीं होता अत: वनस्पतियों की दृष्टि से चैत्र में ही नववर्ष का प्रारम्भ मानना चाहिए।

**7. ईश्वरीय सन् की नववर्ष से तुलना**-पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगकर ऐसा प्रतीत होता है-कि हम भारतीयों ने अपना स्वत्व ही खो दिया है। विश्व में अपनी भी एक विशेष पहचान है, अपना राष्ट्र है, अपनी सभ्यता और संस्कृति है। अपना संवत् एवं वर्ष है, जिसे हम भूलते जा रहे हैं और ईस्वीय सन् के प्रारम्भ को ही भारतीय नववर्ष का प्रारम्भ मान बैठे हैं।

ईस्वीय सन् जनवरी मास में आरम्भ होता है परन्तु इस महीने में कड़ाके की सर्दी पड़ती है जो कि पहले से ही आरम्भ हो चुकी होती है। वनस्पतियों में भी कोई विशेष परिवर्तन या नवीनता दृष्टि-गोचर नहीं होती। इस प्रकार जनवरी से नववर्ष का प्रारम्भ मानने का कोई तुक नहीं है। जनवरी मास से नववर्ष मनाने की परम्परा मात्र चार-पांच शताब्दियों से चल रही है। अत: इसे प्राचीन परम्परा मान कर स्वीकार नहीं किया जा सकता।

चार-पांच शताब्दियों से पूर्व ईस्वीय सन् का प्रारम्भ भी अप्रैल मास से माना जाता था, जो वसन्त ऋतु में पड़ता था। जनवरी की अपेक्षा यह अधिक उपयुक्त था। परन्तु कालान्तर में यह परम्परा बदल गई है और नववर्ष का प्रारम्भ जनवरी से माना जाने लगा।

इतना होने पर भी ''वित्तीय वर्ष'' के रूप में आज भी ईस्वीय सन् का प्रारम्भ अप्रैल मास से माना जाता है जो कि अपनी प्राचीनता का द्योतक है।

आज हमने अपने दैनिक जीवन में ईस्वीय सन् को अधिक महत्ता प्रदान कर रखी है, जबकि इसकी अपेक्षा विक्रमी संवत् कहीं अधिक श्रेष्ठता, प्राचीनता और विशिष्टता को धारण किए हुए हैं।

उपर्युक्त इन तथ्यों से स्पष्ट है कि चैत्रमास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को ही नववर्ष आगमन का पर्व उत्साहपूर्वक मनाना चाहिए।

**8. आत्मचिन्तन का पर्व**-प्रत्येक नववर्ष हमारे लिए आत्मचिन्तन का पर्व होता है। हम सम्पूर्ण वर्ष में किए गए कार्यों का निरीक्षण करें। शुभ कार्यों को धारण करें और अशुभ कार्यों को छोड़ने का संकल्प लें।

**व्यापारी वर्ग**-वर्ष भर में किए गए व्यापार में लाभ-हानि पर विचार करे। आई हुई त्रुटियों को दूर करते हुए उन्नति की ओर अग्रसर हो।

**शिक्षा का नवसत्र**-इसी समय अप्रैल मास में प्रारम्भ होता है। अत: छात्र भी पिछले परीक्षा परिणाम पर विचार करते हुए और अधिक सक्रियता, लग्नशीलता एवं परिश्रमपूर्वक शिक्षा ग्रहण करने का व्रत लें।

**मंगल कामना**

यह नव संवत् बन्धु-बान्धव, सम्बन्धीजन, इष्टमित्र, नर-नारी सभी के लिए प्रेम, गौरव, समृद्धि, उन्नति एवं प्रसन्नता से परिपूर्ण हो। इस परम पुनीत अवसर पर हम सभी सेवा, परोपकार, सदाचार, सद्व्यवहार, मानवकल्याण, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और प्राचीन गौरव में वृद्धि करने का संकल्प लें।

**नवसंवत्सर की नवल चांदनी,**
**जग में नवसंचार भरे।**
**नव आशा के कलश सजा कर,**
**नित मंगल संसार करे॥**

# वेदवाणी

## पुकार सुनने पर वह रक्षा करता है

**आ घा गमद्यदि श्रवत् सहस्त्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम्॥**

**-ऋ० १।३०।८; साम० उ० १।२।१।१; अथर्व० २०।२६।२**

**ऋषि :- आजीगर्ति शुनः शेपः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-निचृद्गायत्री।।**

**विनय**-वह आ जाता है, निश्चय से आ जाता है, हमारे पास प्रकट हो जाता है यदि वह सुन लेवे। बस, उसके सुन लेने की देर है। उस तक अपनी सुनवाई कराना, अपनी रसाई करना नि:सन्देह कठिन है। उस तक हमारी पुकार पहुच जाए, इसके लिए हममें कुछ योग्यता चाहिए, हममें कुछ सामर्थ्य चाहिए, परन्तु इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि वह परमात्मदेव यदि पुकार सुन ले, यदि हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर ले तो वह निश्चय से आ जाता है-और तब वह आता है अपनी सहस्त्रों प्रकार की रक्षा-शक्तियों के साथ हमारी रक्षा के लिए तो उसकी तनिक-सी शक्ति ही बहुत होती है, परन्तु तब यह पता लग जाता है कि उसकी रक्षा-शक्ति असीम है। वह हमारे 'हव' पर-पुकार पर अपने 'वाज' के साथ (अपने ज्ञान-बल के साथ) आ पहुंचता है। वह पीड़ितों की रक्षा कर जाता है और हम अज्ञानान्धकार में ठोकरें खाते हुओं के लिए ज्ञान-प्रकाश चमका जाता है, परन्तु यदि वह सुन लेवे। कौन कहता है कि वह सुनता नहीं? नि:सन्देह, हमारी भांति उसके कान नहीं, परन्तु वह परमात्म देव बिना कान के सुनता है। यदि हमारी प्रार्थना कल्याण की प्रार्थना होती है और वह सच्चे हृदय से, सर्वात्मभाव से की गई होती है तो उस प्रार्थना में यह शक्ति होती है कि वह प्रभु के दरबार में पहुंच सकती है। आह! हमारी प्रार्थना भी प्रभू के दरबार में पहुंच सके, हमें इतनी स्वार्थशून्यता, आत्मत्याग और पवित्रता हो कि हमारी पुकार उसके यहां तक पहुंच सके। यदि हमारी प्रार्थना में इतनी शक्ति हो, हम अन्धकार में पड़े हुए, दु:ख-पीड़ितों, दुर्बलों के हार्दिक करूण-क्रन्दनों में इतना बल हो कि इन्द्रदेव उसे सुने ले तो फिर क्या है। तब तो क्षण-भर में वे करुणासिन्धु हम डूबतों को बचाने के लिए आ पहुंचते हैं। बस, हमारी प्रार्थना उन तक पहुंचे, हमारी पुकार में इतना बल हो, तो देखो वे प्रभु अपने सब साज़-सामान के साथ, अपने ज्ञान, बल और ऐश्वर्य के भण्डार के साथ, अपनी दिव्य विभूतियों की फौज के साथ हम मरतों को बचाने के लिए, हम निर्बलों में बल संचार करने के लिए, हम अन्धों को अपनी ज्योति से चकाचौंध करने के लिए आ पहुंचते हैं।

## ''स्वतन्त्रता के मन्त्रदाता थे महर्षि दयानन्द सरस्वती''

इतिहासकारों का मानना है कि भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम (1857 ई.) में महर्षि दयानन्द सरस्वती का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वे स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी नेता रानी लक्ष्मीबाई, तात्यांटोपे, नाना साहब आदि के निरन्तर संपर्क में थे उनके प्रेरणा स्रोत थे, यह कहना था **प्राचार्य एस० आर० प्रभाकर का** जो आर्य समाज मन्दिर पटियाला द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोधोत्सव के अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द द्वारा (1857 ई.) में लिखित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वदेशी राजा की वकालत की गई है। स्वामी जी से प्रेरणा पाकर लाला लाजपतराय, भगत सिंह व राम प्रसाद बिस्मिल जैसे लाखों देश भगत देश की आज़ादी के लिए आन्दोलन में कूद पड़े। कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ जिसमें आर्य समाज के सभी सदस्यों ने सभी के कल्याण के लिए यजाग्नि में आहुतियाँ प्रदान की। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आचार्य **निखिल मण्डल शास्त्री** व **दीपक शास्त्री** ने स्वामी दयानन्द को महान समाज सुधारक बताया। **आचार्य विजेन्द्र शास्त्री** ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द जी द्वारा निर्देशित वेद मार्ग पर चलकर वर्तमान समाज की सभी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

अन्त में प्रधान **राजकुमार सिंगला** ने सभी का धन्यावाद किया। इस अवसर पर वीरेन्द्र सिंगला, वेद प्रकाश तुली, जितेन्द्र शर्मा, प्रवीण कुमार, बाबू खान, भागीरथ, अमित बेदी, के० के० मौदगिल, रेणु गुप्ता, स्वराज जोशी, सोनम आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

**-विजेन्द्र शास्त्री**

# आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में दिनांक 3 अप्रैल 2016 को प्रात: साप्ताहिक सत्संग का आयोजन किया गया जिस में श्री रणजीत आर्य एवं अनु आर्या मुख्य यजमान बने। इसके पश्चात आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। यज्ञ के पश्चात आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर की चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इस चुनाव को सम्पन्न करवाने के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा एवं वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल नवांशहर पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित हुये। सर्वप्रथम पुरानी अन्तरंग सभा को भंग करके इनकी देखरेख में आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर के चुनाव की प्रक्रिया शुरू हुई।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से पर्यवेक्षक के रूप में आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में गये सभा उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा एवं श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग नव निर्वाचित प्रधान श्री रणजीत आर्य के साथ।

सबसे पहले आर्य जनों से प्रधान पद के लिये नाम पूछा गया जिस पर ईश्वर चंद रामपाल ने प्रधान पद के लिये श्री रणजीत आर्य का नाम प्रस्तुत किया। कोई अन्य नाम प्रस्तुत न होने की वजह से सर्वसम्मति से श्री रणजीत आर्य को आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का प्रधान चुन लिया गया।

इस दौरान श्री स्वर्ण शर्मा, श्री ईश्वर चंद्र रामपाल, कुबेर शर्मा, नन्दनी शर्मा, सुभाष आर्य, इन्दु आर्या, अनु आर्या, दिव्या आर्या, सान्या आर्या, सृष्टि आर्या, दीपक सूरी, बबिता सूरी, हरविन्द्र सिंह बेदी, राकेश बावा, अश्विनी कुमार डोगरा, रमेश मुटरेजा, हर्ष लखनपाल, सुदर्शन आर्य, सुनील मल्होत्रा, संगीता मल्होत्रा, ललित कालिया, अमन आर्य, प्रेम नाथ मित्तू, नवीन चावला, राजीव शर्मा, जतिन्द्र आर्य, सरिता आर्या, रसिक वर्मा, नेहा वर्मा, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, विनोद तिवारी, संगीता तिवारी, विजय लक्ष्मी शर्मा, रणजीत खन्ना, राजीव कुन्दरा, पवन मल्होत्रा, रजनी मल्होत्रा, पार्षद प्रेम लता वरिष्ठ, वेद वशिष्ठ एवं अन्य धर्म प्रेमी सज्जन आर्य समाज मंदिर में पधारे हुये थे। इसके पश्चात ऋषि लंगर का प्रबन्ध किया गया था जिसमें आए हुये सभी आर्य जनों ने आनन्द उठाया।


गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871


श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।